हाथी और चिरैया

चित्रांकनः सुबीनीता देशप्रभु

किताब के बारे में:

यह लोक कथा/कहानी उत्तर प्रदेश के ललितपुर ज़िले में प्रचलित है। यह बड़ी किताब बुन्देली और हिंदी भाषा में उपलब्ध है। एल.एल.एफ. के 'स्थानीय भाषा सामग्री विकास कार्यक्रम' के तहत यह सामग्री विकसित की गई है। बुन्देली भाषा सामग्री के एकत्रण, चयन, अनुवाद, सम्पादन करने एवं अवधारणा में ललितपुर ज़िले के शिक्षकों और शिक्षिकाओं की सहभागिता रही है।

Copyright © Language and Learning Foundation 2019
All rights reserved.

एल.एल.एफ के बारे में:

नई दिल्ली स्थित लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एल.एल.एफ.) शैक्षिक संस्था के तौर पर प्रारम्भिक भाषा शिक्षण से जुड़े आयामों पर काम कर रही है। बहुभाषी शिक्षण के तहत शुरूआती कक्षाओं में बच्चों की घर की भाषा में विकसित पठन सामग्री की भूमिका अहम होती है। यह कार्यक्रम क्षेत्रिय भाषा की विषयवस्तु पर आधारित एक पहल है।

हाथी और चिरैया

चित्रांकनः सुबीनीता देशप्रभु

एक चिरईया ने एक पतरे पेड़ पै बच्चा दये।
पास में एक हाथी बन ठनकें घूम रओ तौ।

रोज हाथी उतै सें जाततौ सो पेड़ सें अपनी पीठ रगड़त तौ, जीसें पूरौ पेड़ हिल जात तौ।

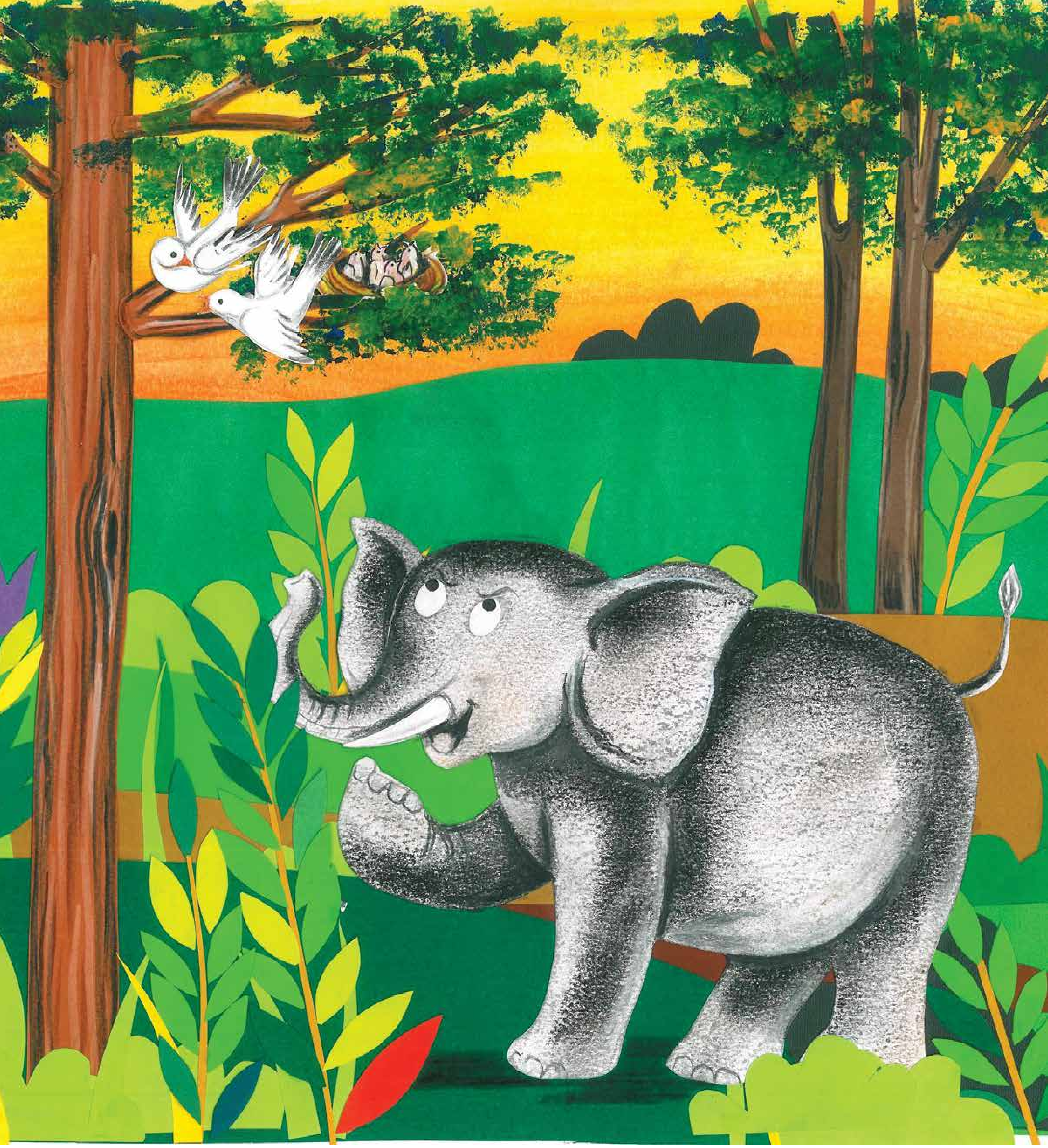

एक दिना चिरईया हथिनी सें जा कें बोली,
''भौत हो गयी, अपने हाथी खों समझा लो,
रोज हमाये पेड़ सें पीठ रगड़त है।"

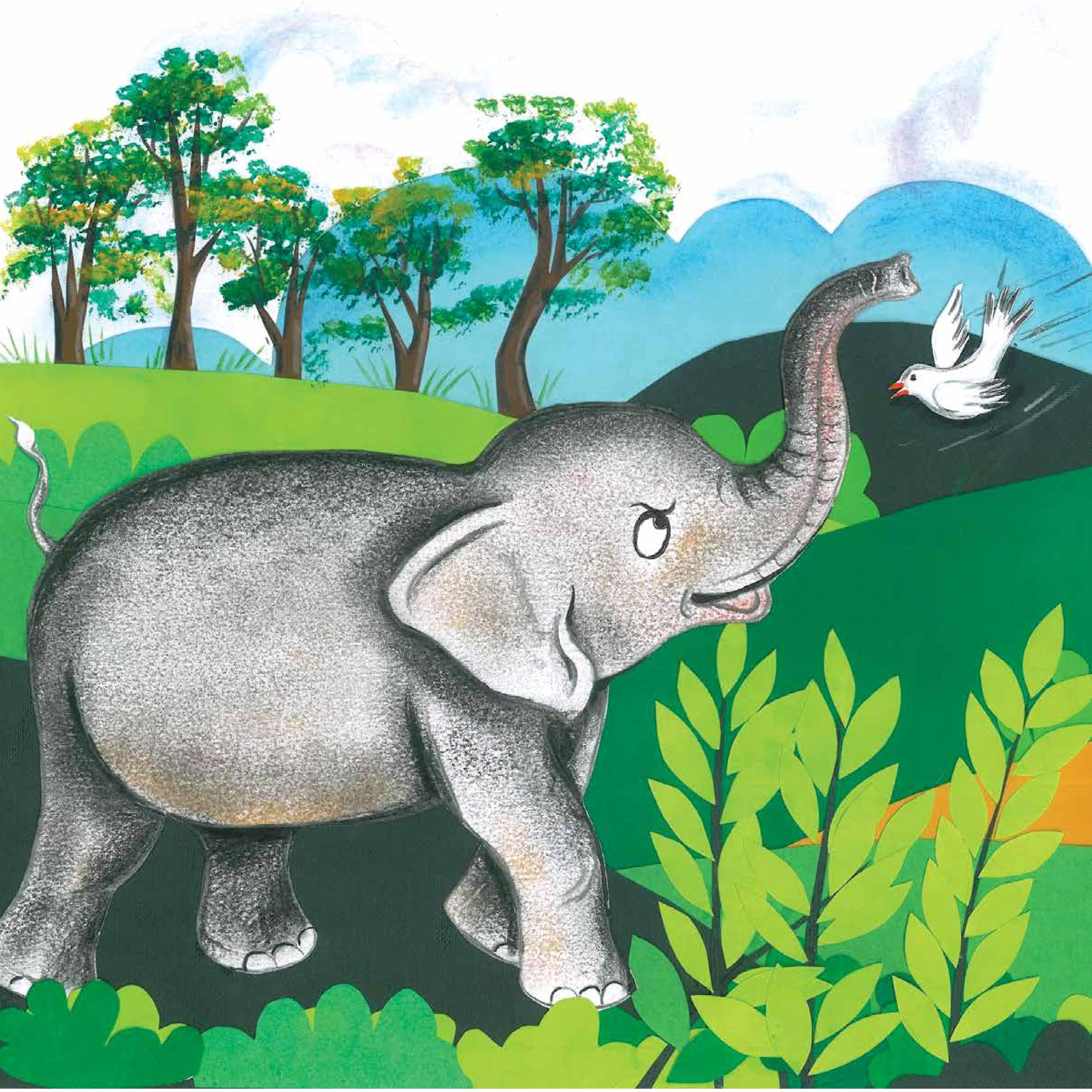

लेकिन हाथी नईं माने, बोले, ‘‘जा चिरईया का कर लै हमाओ?”

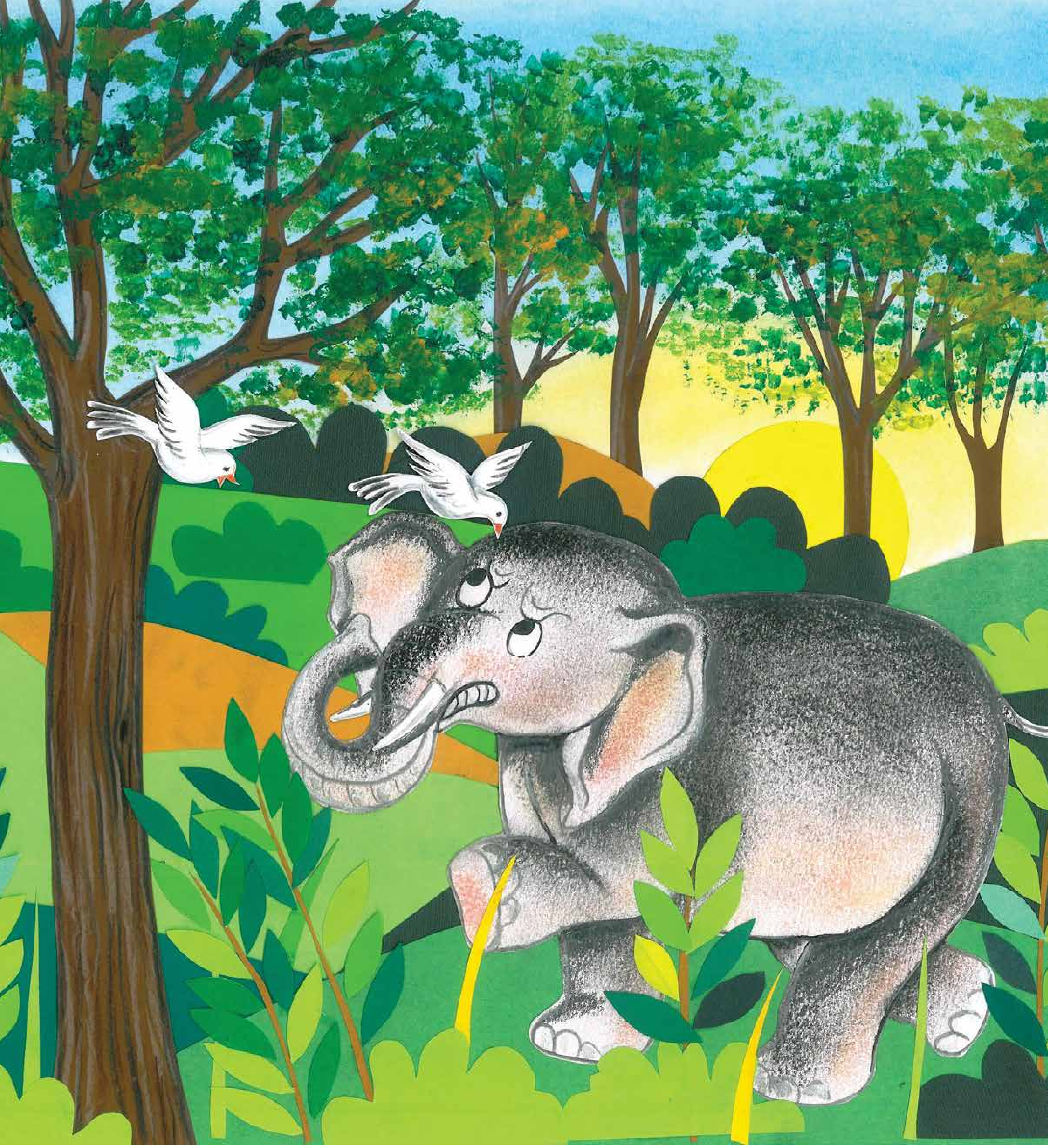

परेशान होकें चिरईया नें चिरवा सें कयी, ‘‘देखो कोनऊं दिना हमाये बच्चा गिर गये, तो का हुइयै?’’ चिरवा नें कयी, ‘‘ई बार आन दो, देख लें।’’

हाथी फिर आओ और पीठ घिसन लगे। चिवा देखत रओ और चिरईया उड़कें हाथी के लिगाँ गयी।

चिरईया हाथी के कान में घुस गयी। हाथी चिंघाड़ मारी, और पछाड़ खाकें गिर गओ।

''छोड़ियो नईं, छोड़ियो नईं'' चिरवा नें कयी। फिर बोले, ''अब निकर आओ'' चिरईया कान में सें निकर आयी।

ऊ दिना के बाद सें हाथी कभऊँ कौनऊँ पतरे पेड़ सें अपनी पीठ नईं घिसत। सो,

बाढ़ई नें बनायी टिकटी
हमायी कानियाँ निपटी।

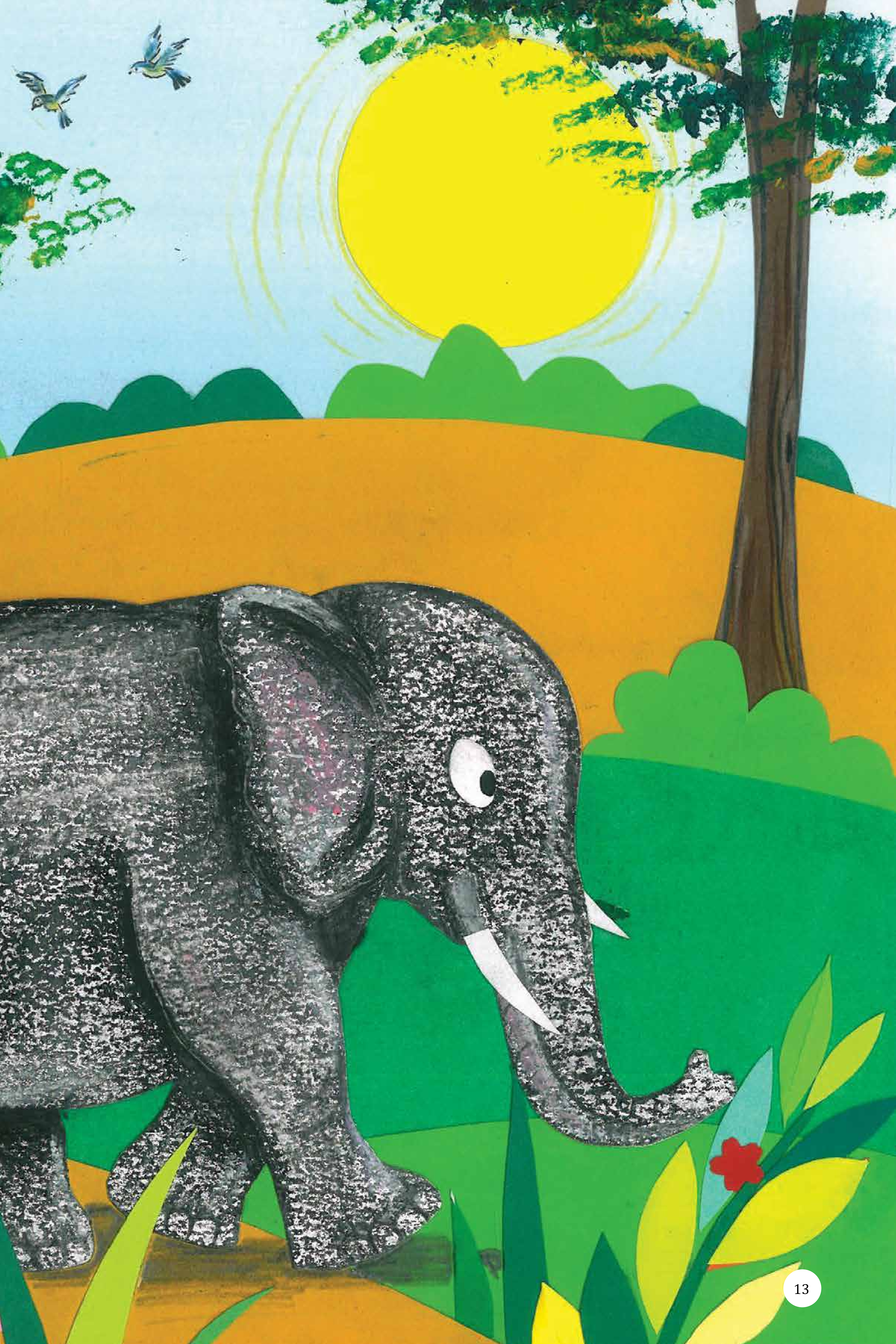

हाथी और चिरैया

एक चिरईया ने एक पतरे पेड़ पै बच्चा दये। पास में एक हाथी बन ठनकें घूम रओ तौ। रोज हाथी उतै सें जाततौ सो पेड़ सें अपनी पीठ रगड़त तौ, जीसें पूरौ पेड़ हिल जात तौ। एक दिना चिरईया हथिनी सें जा कें बोली, ''भौत हो गयी, अपने हाथी खों समझा लो, रोज हमाये पेड़ सें पीठ रगड़त है।" लेकिन हाथी नईं माने, बोले, ''जा चिरईया का कर लै हमाओ?"
परेशान होकें चिरईया नें चिरवा सें कयी, ''देखो कोनऊं दिना हमाये बच्चा गिर गये, तो का हुइयै?" चिरवा नें कयी, ''ई बार आन दो, देख लें।'' हाथी फिर आओ और पीठ घिसन लगे। चिवा देखत रओ और चिरईया उड़कें हाथी के लिगाँ गयी।
चिरईया हाथी के कान में घुस गयी। हाथी चिंघाड़ मारी, और पछाड़ खाकें गिर गओ। ''छोड़ियो नईं, छोड़ियो नईं" चिरवा नें कयी। फिर बोले, ''अब निकर आओ" चिरईया कान में सें निकर आयी। ऊ दिना के बाद सें हाथी कभऊँ कौनऊँ पतरे पेड़ सें अपनी पीठ नईं घिसत। सो,
बाढ़ई नें बनायी टिकटी
हमायी कानियाँ निपटी।

हाथी और चिरैया

एक चिड़िया ने एक पतले पेड़ पर बच्चे दिए। पास में एक हाथी बना-ठना घूम रहा था। रोज़ हाथी उधर से जाता तो पेड़ से अपनी पीठ घिसता। इससे पूरा पेड़ हिल जाता। एक दिन चिड़िया हथनी से जाकर बोली, ''बहुत हो गया! अपने हाथी को समझा लो, रोज़ हमारे पेड़ से पीठ घिसता है।''
लेकिन हाथी नहीं माना। बोला, ''यह चिड़िया क्या कर लेगी हमारा?" परेशान होकर चिड़िया ने चिडे से कहा, ''देखो, किसी दिन हमारे बच्चे गिर गए तो क्या होगा?'' चिडे ने कहा, ''इस बार आने दो, देख लेंगे।'' हाथी फिर आया और पीठ घिसने लगा। चिड़ा देखता रहा और चिड़िया उड़कर हाथी के पास गयी। चिड़िया हाथी के कान में घुस गयी। हाथी ने चिंघाड़ मारी और पछाड़ खाकर गिर गया।
''छोड़ना मत, छोड़ना मत'' चिडे ने कहा। फिर बोला, ''अब निकल आओ।'' चिड़िया कान में से निकल आई। उस दिन के बाद से हाथी कभी किसी पतले पेड़ से अपनी पीठ नहीं घिसता।

Designed by www.stelladesignandprint.com
Language and Learning foundation
TATA TRUSTS